शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्राम्य जीवन को चित्रित करते बुन्देली लोक गीत
(बुन्देली लोक साहित्यके संदर्भ में)

डॉ. अरूणा मोटवानी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
धार, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मध्यप्रदेश में बुन्देल खण्ड, बघेल खण्ड, मालवा और निमाड़ चार जनपदीय सांस्कृतिक धाराएँ हैं। मालवी, निमाड़ी, बघेली और बुन्देली बोली का आश्रय लेकर इन क्षेत्रीय संस्कृतियों का विकास हुआ है और वृहद भारतीय लोक सांस्कृतिक परम्परा के विकास में इनका अमूल्य योगदान है। बुन्देली पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोली है। जब कोई बोली साहित्य सृजन के क्षेत्र में अपना स्थान बना लेती है तो वह उपभाषा की संज्ञा प्राप्त कर लेती है। जहाँ तक बुन्देली का प्रश्न है, इसमें इतना अधिक साहित्य लिखा जा चुका है कि आज वह अवधी , ब्रज और भोजपुरी के समानान्तर खड़ी होने की सामर्थ्य रखती है। लोक जीवन एवं लोक मानस से जुड़ी बुन्देली बोली एवं उसका साहित्य विशेषतः लोकगीतों में भारतीय ग्रामीण समाज का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। ग्राम्य जीवन के चितेरे यह बुन्देली लोकगीत अपनी मिठास और खनक लिए अपना महत्व रखते है।

शब्द कुंजी - 1. क्षेत्रीय संस्कृति - क्षेत्र विशेष से जुडे आचार-विचार, व्यवहार, परम्पराएँ, 2. आश्रय - संबल, 3. वृहद-बड़ा, 4. अमूल्य - जिसका मूल्य आंका न जा सके, 5. समानान्तर - बराबरी से।

प्रस्तावना

बुन्देली साहित्य का इतिहास बुन्देलखंड के इतिहास से जुड़ा हुआ है। इसके लिए बुन्देली समाज व उसके साहित्य को मूल्यांकित किया जाना जरूरी है। बुन्देली साहित्य जहाँ बुन्देली समाज को गतिशीलता प्रदान करता है वही वह उसके आचार-विचार , कर्मकाण्ड, लोक रूढ़ियाँ , विश्वास, धार्मिक परम्पराएँ आदि का उद्घाटन भी करता है। बुन्देली के उद्भव और विकास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि विक्रम की नवीं सदी के साहित्य में नाथों , सिद्धों, संतो और उपदेशको की भाषा में किसी स्थानीय भाषा का आग्रह नहीं है। इनमें 'बोलियो की नींव' है जिनमें भाषा का विकास दिखाई देता है। बुन्देली का अपना विस्तृत इतिहास है, जो विक्रमी दसवीं सदी से मौखिक और लिखित रूप में स्पष्ट परिलक्षित होने लगता है। विक्रम की चौदहवीं सदी से सत्रहवीं सदी तक बुन्देलखण्ड में जो काव्य रचा गया वह रीति भक्ति काव्यधारा का साहित्य है। विक्रम की सत्रहवीं से अट्ठाहरवीं सदी के मध्य का काल सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय उन्मेष और श्रृंगार रस के उत्कर्ष का काल था। वास्तव में यह समय बुन्देली साहित्य का भी 'स्वर्ण युग' था, क्योंकि इस काल में इस साहित्य में हरिसेवक मिश्र, पृथ्वीसिंह रसनिधि , कृष्ण कवि , खण्डन कायस्थ, कारे कवि, गुमान मिश्र, बोधा आदि कवि जुड़े। पद्माकर के काव्य में बुन्देली जनजीवन और

संस्कृति व्यंजित हुई है। लोक कवि ईसुरी ने भी शास्त्रपरक काव्य रचना की।

विक्रम की उन्नीसवीं सदीं के बाद आधुनिक काल तक आते-आते बुन्देली रचनाओं में अनेक प्रकार की चेतना दिखाई देती है। इस काल के प्रारम्भिक कवियों में रसिकेश, बलदेव प्रसाद, कली कवि, वृषभानु कुवरि, चतुरेश, लघुदास नीखरा, जैसे कवि है। मदन मोहन द्विवेदी ने लक्ष्मीबाई पर आधारित रासो काव्य का प्रणयन किया। भवानीप्रसाद कहावतों को आधार बनाकर एवं ऐनानंद मुहावरों के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों का ज्ञापन करते हैं।

सुखराम चौबे , गुणाकर, गौरीशंकर शर्मा , गौरीशंकर सुधा , जनन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी , जानकीप्रसाद द्विवेदी , शिवसहाय चतुर्वेदी , रामचन्द्र भार्गव आदि अतीत के जीवन मूल्यों एवं काव्य शैलियों को अपनाते है। राष्ट्रीय काव्य धारा घासीराम व्यास एवं रामचरण हयारण 'मित्र' के काव्य में मुखरित हुई है।

पंडित ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी , भैयालाल व्यास , लक्ष्मीनारायण पथिक ने भावना के स्तर पर मानव को परखा है। अत्याधुनिक काल में डॉ. बलभद्र तिवारी , कैलाश मडबैया , गंगा प्रसाद , बरसैया गुप्त, कपिल देव तैलंग, महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', गुणसागर सत्यार्थी , अवधेश, संतोषसिंह बुन्देला, बाबूलाल खरे , रघुवीर श्रीवास्तव , दुर्गेश दीक्षित, माधव शुक्ल मनोज , लोकेन्द्रसिंह नागर, वासुदेव प्रसाद खरे , ओमप्रकाश सक्सेना आदि आते है, जो बुन्देली काव्य साहित्य के नये आधार स्तम्भ हैं।

समकालीन ग्रामीण परिवेश , व्रतो, त्योहारों और प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रभावशाली चित्रों के साथ आधुनिक जीवन के यथार्थ का सुन्दर चित्रांकन इस नये काव्य में हुआ है। इस काव्य से जुड़ी संगीतमय विधा लोकगीत है। लोक जीवन के सुख-दुख, उल्लास हर्ष विषाद और संघर्ष को अभिव्यक्त करते हुए लोकगीत कोटि-कोटि हृदयों का प्रतिनिधित्व करते है। लोकगीत लोक जीवन में इतने गहरे पैठे हुए है कि ये जनजीवन के अविच्छिन्न अंग बन गये हैं। ग्रामीण समाज लोकगीतों के दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखता आया है। लोक गीतों की यह परम्परा आदियुग से चली आ रही है। जिससे लोक संस्कृति अपने मूलरूप में झंकृत होती है।

शोध का उद्धेश्य

ग्राम्य जीवन का सुन्दरतम प्रतिबिम्ब लोक संगीत में दिखाई पड़ता है। क्योंकि लोकगीतों में कृत्रिमता का अभाव रहता है। इसमें ग्राम्य जीवन का सीधा-सादा परिचय रहता है। वे व्यक्ति के बाह्य जीवन के साथ-साथ उसके मानसिक भावों का भी परिचायक होते हैं। परन्तु सूक्ष्मता की अपेक्षा स्थूलता और स्पष्टता का अधिक महत्व होता है। लोकगीत संक्षिप्त , सरल, स्पष्ट, स्वाभाविक, सुन्दर, अनुभूतिजन्य और संगीतमय होते है। सभी लोकगीत संगीत से अनुप्राणित होते हैं। बुन्देलखण्ड के ग्राम्य जीवन को चित्रित करते यह लोकगीत अपना महत्व बनाये हुए है। इसी महत्व को निरूपित करना इस शोध का उद्धेश्य है।

उपकल्पना

बुन्देलखण्ड मध्यप्रदेश की संस्कृतिक विरासतों को समेटे एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में भारत के मानचित्र पर अंकित है। बुन्देली इस क्षेत्र की बोली है। इस बोली की मिठास का प्रभाव न सिर्फ शिष्ट समुदाय पर हुआ है बल्कि ग्रामीण समाज तो इसी खाड के माधुर्य का रसास्वादन कर उससे आप्लावित है। बुन्देली बोली से जुड़े लोकगीतों की खनक एवं उसकी मिठास में ग्राम्य

जीवन की झाँकी दिखाना एवं बुन्देली साहित्य में लोकगीतों की महत्ता स्थापित करना इस शोध कार्य की उपकल्पना हैं।

निदर्शन

निदर्शन पद्धति में सर्वप्रथम बुन्देली साहित्य के विकासक्रम को सारगर्भित रूप में केन्द्रित करते हुए बुन्देली साहित्य का विस्तृत अध्ययन कर मूल प्रतिपाद्य विषय को केन्द्रित किया है। बुन्देली साहित्य के मनभावन लोकगीतों में ग्राम्य जीवन के आचार-विचार , व्यवहार एवं परम्पराओं के निर्वहन को उकेरा है।

सामग्री संकलन

प्राथमिक स्रोत के रूप में बुन्देली साहित्य की कुछ मूल रचनाएँ और लोकगीतों की कुछ मूल रचनाएँ - (राजस्थानी, मालवी, बुन्देली) को पढ़कर उन्हें आधार बनाया गया हैं।

द्वितीयक सामग्री के रूप में कुछ सहायक ग्रंथों बुन्देली-हिन्दी कोश बुन्देली के कतिपय विशेषांक आदि सम्मिलित हैं।

मूल अध्ययन विवेचन

बुन्देली लोक गीतों को कुछ वर्गो में विभाजित कर इसमें ग्रामीण जीवन को देखा जा सकता है -

1. संस्कार गीत , जन्म से विवाह तक। बुन्देली ग्रामीण समाज में जन्म के समय सोहर गीत गाये जाते है सगुन भए राजा महलन आये 2
सोमोरी गुड़या सखियन मंगल गाये।2
दुआरिन चैमुख दियला जरायै 2
दरस पा सबके मान हरखावै। 2

सौभाग्य गीत

आज दिन सोने कौ महाराज।
राजा दशराथ के पुत्र भये है।

चरूआ (चढुवा चढ़ाव के गीत) -

चढुवा चढ़ाने का अर्थ है कोरे मिटटी के घड़े को हल्दी, कुमकुम, चावल से टीका लगाकर पानी भर चूल्हे पर रखना यह रस्म बुन्देलखण्ड में ग्रामीण परिवेश में घर में सास या बुजुर्ग महिला द्वारा की जाती है। पानी में जायफल, अजवाइन, डालकर उबाला जाता है। वही पानी जच्चा को पीने को दिया जाता है। महिलाएँ ढोलक की थाप पर गाती है -

सासो आहै चढ़ुआ चढ़ाहैं,
चढुआ चढ़ाई नेग मागे हो।

जच्चा को एक माह बाद कुँआ पूजन हेतु ले जाया जाता है -

ससुर से कइयो कुं आला खुदाये
मोरी पिराबे दोउ पईयाँ
राजा पिया गये हैं परदेशन
मोरे गालन पड़ गई गढ़ कुइयाँ।

झूलागीत - बच्चे के थोडा बडे होने पर झूलागीत या लोरी गाई जाती है -

तू तो सोजा बारे बीर
वीर की बनैयां लैहो जमना के तीर।

मुण्डन एवं अन्न प्रसन गीत -

ललना की झालर उतराई
भौजी ले है मै सोनी कौ कांगना

संस्कार गीत - 2 विवाह एवं उसके उपरांत -

यज्ञोपवीत (बरूआ) गीत -

तीन तगा को डोरा री,
दमरी कौ सुत ए भैया।
पैले में विस्नु, दूजे में बिरमा।
तीजो सूत शंकर अवधूत सुन भैया।

सगुन गीत -

सो आज मेरे रामजू खों लगुन चढत है -
सगुन चढ़त है आनन्द बढ़त है।

बन्ना-बन्नी -

हमारे मन भावे अवधेश राजा बनरा।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हल्दी तेल चढ़ाने के गीत -
जो बन्ना नइयां मोरे बस में
कौना हरदी फुलाई, कौनां हरदी मिलाई।
देवी-देवताओं को निमन्त्रित करने वाले गीत -
तुम मोरे नेवते पवन सुन
तुम मोरे आइयो।
हरदौल लालाल मोरी कहीं मान लियों हो हरदौल लाला
(उबनी) बारात आगमन के गीत -
मन को एकउ ने आओ
बड़ी -बड़ी मूछों के आये।
भांवर गीत
हरे बास मण्डप छाये
सिया जु को राम ब्याहन आये।
3. श्रृंगार एवं उपालम्भ गीत -
उरझ गए नैना सुरझत नाही।
4. सावन के झूलागीत -
झूला डरो कदम की डार
झुलाये राधा प्यारी रे हारी।
5. आख्यान गीत - भक्ति संबंधी -
राम नाम सुमरो नही रे मोरे प्यारे
करे न हरि सो से हेत
वे रनर ऐसे जायेंगे मोरे भैया
ज्यो मूली को खेत रे।
भजन करौ औ।
अन्य - कहावते
ज्ञानी मारे ज्ञान से रोम-रोम मिट जाये।
मूरख मारे डेड़का टूट कनपटी जाय।
पहेलियां -
घरे पजें ने हाट बिकाय।
जिनको दैखैं पिया रिसाय।
बुन्देली बझौअल -
भूरी बिलैया हरीरी पूछ
न जानौ तो बऊ से पूछ - मूली
हास्य गीत -
डुकरा तोरवो कितऊं नैया।
डुकरा कीखाट अरेला मै डारी।
बुन्देली का लावनी और ख्याल साहित्य -
ख्याल लोक भाषा का परम्परागत शब्द है -
किस दिन लिया जन्म बंसी ने
कौन मुहरत कौन घरी ?
किस नक्षत्र में बजी बाॅसुरी
मनमोहन ने अधर धरी।
परिणाम एवं विवेचन -
बुन्देली लोकगीत मूलतः लोक साहित्य का अभिन्न अंग है। लोक साहित्य चंूकि ग्रामीणता एवं ग्रामीण परिवेश की भावभूमि पर खड़ा निखरा एवं पनपा है अतः इन गीतों में बुन्देल खण्ड की ग्रामीण परम्पराओं, संस्कारों एवं संस्कृति को देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्राम्य जीवन के चितेरे यह बुन्देलखण्डी गीत अपना एक अलग महत्व रखते है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बुन्देली संस्कृति और साहित्य , प्रो. नर्मदाप्रसाद गुप्ता, म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद का पाठ्यक्रम।
2. बुन्देली लोक साहित्य परम्परा और इतिहास, प्रो. नर्मदाप्रसाद गुप्ता - म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल।
3. बुन्देली साहित्य का इतिहास , डॉ.. आरती दुबे साहित्य अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद।